ये अव्यक्त इशारे

अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

31-08-2026

पवित्रता की निशानी है - स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं है। अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधि पूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो।

Finish the seed of impurity and become completely clean (pure).

The sign of purity is cleanliness and truth. Throughout the day, whether you are sitting, moving around, speaking, or doing physical or subtle service, if it is not done in the right way, if there is the slightest difference in your way of doing it, then that too is not cleanliness, which means it is not purity. Simply to cause someone sorrow or to perform a sinful action is not the only impurity. However, if you experience truth and cleanliness in yourself in the right way, then you are pure.